A–0180

Total Pages : 3 **Roll No. .....**

MASL–504

M.A. Sanskrit (MASL)

(नाटक एवं नाट्यशास्त्र भाग-01)

Examination, June 2025

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 70

नोट :— यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) 2×19=38

नोट :— खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. दशरूपक के आधार पर शृङ्गारिक दृष्टि से नायक के भेदों का निरूपण कीजिए।

2. नाट्यशास्त्र के अनुसार नाट्यवृत्तियों का परिचय दीजिए।

3. निम्नलिखित कारिका की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए–

अन्यद् भावाश्रयं नृत्यं नृत्तं ताललयाश्रयम्।

आद्यं पदार्थमिनयो मार्गो देशी तथा परम्॥

मधुरोद्धतभेदेन तद् द्वयं द्विविधं पुनः।

लास्यताण्डवरूपेण नाटकाद्युपकारकम्॥

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) नाट्यगृह निर्माण

(ख) नायक के सात्विक गुण

(ग) प्राप्त्याशा

5. जर्जर की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विस्तृत लेख लिखिए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न) 4×8=32

नोट :– खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. निम्नलिखित कारिका की व्याख्या कीजिए–

   क्वचिद्धर्मः क्वचित्क्रीडा क्वचिदर्थः क्वच्छ्रमः।

   क्वचिद्धास्यं क्वचिद्युद्धं क्वचित्कामः क्वचिद्वधः॥

   धर्मो धर्मप्रवृत्तानां कामः कामोपसेविनाम्।

   निग्रहो दुर्विनीतानां विनीतानां दमक्रिया॥

2. पताका तथा प्रकरी अर्थप्रकृतियों को लक्षण सहित समझाइए।

3. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए–

   उपक्षेप तथा परिकर

4. प्रतिमुख सन्धि के तेरह अङ्गों का लक्षण सहित निरूपण कीजिए।

5. सात्त्वती वृत्ति का लक्षण देते हुए इसके चार अङ्गों का वर्णन कीजिए।

6. निम्नलिखित कारिका की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए–

   न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।

   नासौ योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन् यन्न दृश्यते॥

7. नाट्यमण्डप के निर्माण का विस्तार से वर्णन कीजिए।

8. 'स्वाधीनपतिका' तथा 'वासकसज्जा' नायिकाओं का लक्षण देते हुए उनका वर्णन कीजिए।

****